19/05/2020
Tuesday

D.El.Ed 4th Sem

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संगठन

"प्रत्येक विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था की जाती है। ये क्रियाएँ छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक हैं।"

1- केन्द्रीयकरण – केन्द्रीय समिति द्वारा सभी लोग का पूरा हिसाब-किताब रखा जाय।

2- पर्यवेक्षण – "विद्यालय में सुविधाजनक, परिस्थिति का निर्माण करना।"

3- सहगामी क्रियाओं में छात्र का भाग लेना – सहगामी क्रियाओं के स्वरूप तथा उनमें किस सीमा तक विविधता लाई जा सकती है का निर्धारण करना।

4- स्थान तथा सहस्यता – विद्यालय की समय सारणी में सहगामी क्रियाओं को स्थान देना।

5- सहगामी क्रियाएँ तथा वित्तव्यवस्था – पाठ्य सहगामी क्रियाएँ शिक्षा का एक अंग, धन को किया विशेष पर खर्च।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन में ध्यान रखने योग्य बातें

1 ⇒ सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करना।
2 ⇒ किसी क्रिया को अनिवार्य न बनाया जाय।
3 ⇒ विद्यार्थियों का अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त किया जाय।
4 ⇒ वित्तीय साधनों की व्यवस्था की जाए।
5 ⇒ परामर्श एवं मार्गदर्शन करने समुचित व्यवस्था की जाए।
6 ⇒ पाठ्य सहगामी क्रिया का शैक्षिक मूल्यांकन होना।
7 ⇒ कार्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
8 ⇒ बाह्य मूल्य की अपेक्षा आन्तरिक मूल्य को महत्व देना।
9 ⇒ कार्य संचालन हेतु पर्याप्त साधन व सुविधाएं।
10 ⇒ कई प्रकार की क्रियाएं आरम्भ न करना। (न की जाय)

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रकार

(1) शारीरिक गतिविधियाँ।
(2) सांस्कृतिक गतिविधियाँ।
(3) साहित्यिक गतिविधियाँ।
(4) मानसिक गतिविधियाँ।
(5) सामाजिक गतिविधियाँ।
(6) नागरिकता प्रशिक्षण।
(7) आर्थिक प्रशिक्षण।

end

Scanned with CamScanner